सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कृष्ण स्पर्श - ५५

जय श्री कृष्ण

Vibrant Pushti

नाथद्वारा की दूरी

मन से तेरे आंगन की दूरी

नयन से दर्शन की दूरी

एक झांकी नजर की दूरी

समय समय की दूरी

विरह वेदना की दूरी

कैसी यह जन्म की दूरी

तेरे प्रेम की दूरी

तेरे निकट की दूरी

कैसे तोड़ूं हमरी दूरी

दूर दूर से स्मरु दूरी

तेरे स्मरण से कटे दूरी

कैसी तेरी लीला की दूरी

कर कोई कृपा छूटे दूरी

मुझे तेरी चरण की दूरी

मुझे तेरे शरण की दूरी

मन दौड़ कर तोड़ूं दूरी

डग भर कर दूर हो दूरी

आया मैं आया तोड़ने दूरी

आया आया आया आया

दूरी दूरी दूरी दूरी दूरी

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आ गया तेरे द्वार

हे नाथ! आ गया तेरे द्वार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

निरख निरख कर मेरे नयन अपलके

तरस तरस कर मेरे नयनन बरसे

तेरो ऐसो कैसो दीदार

मेरे नयन न झुकें झुकें झुकें

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

द्वार द्वार पर मेरे चरण अटके

तेरी झांकी मेरे मन को रोके

तुने कैसो कियो शृंगार

मेरी नज़र न भटकें भटकें भटकें

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

एक एक अंग पर तेज़ स्फूरे

सारा वदन मुझे तेरी ओर खिंचे

तेरी लीला अनोखी अपरंपार

मुझे कर दिया बावरी ही बावरी

तु कैसे खड़ा है श्री नाथ!

तेरी झांकी पर मैं वारी 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृपा तु करें इतनी

ख्याल रखें तु इतना

जबतक सांस लिए

तबतक तु संवारें

न कोई अवज्ञा

न कोई भेदभाव

न कोई पराया

न कोई प्रकार

न कोई भ्रमार

न कोई बहाना

न कोई देर

न कोई वैर

न कोई अवैध

न कोई अज्ञान

न कोई अधर्म

केवल सिद्धांत

केवल कर्म निरपेक्ष

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे श्री नाथजी!

यही कृपा निधि से ही हम भी आचरणे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" મમતા ભરેલી માં "

જેનું હૃદય કેવળ કુટુંબનાં દરેક સભ્ય માટે ધડકે 🙏

જેની ધડકન સદા કુટુંબનાં દરેક સભ્ય નું સુખ જ ઝંખે 🙏

જેનું મગજ કુટુંબનાં સર્વે સભ્યો નાં ઉલ્લાસ માટે કાર્ય કરે 🙏

જેની આંખો કુટુંબનાં તમામ સભ્યોની વ્યવસ્થા માટે જ જુએ 🙏

જેનાં શ્વાસ કુટુંબનાં એક એક સભ્ય માટે જ બલિદાન કરે 🙏

જેનાં હાથ કેવળ કુટુંબમાં ' સર્વે સુખી ભવંતુ ' માટે બળે 🙏

જેનાં પગ સદા કુટુંબની સેવા માટે જ દોડે 🙏

જેનાં વિચાર કેવળ ને કેવળ એક જ ધારા માં વહે - મારાં બાળકો સદા આનંદમય 🙏

જેનાં શબ્દોમાં કેવળ નિઃસ્વાર્થ ભાવ જ ભર્યો હોય 🙏

જેને આપણે કાંઈ પણ કહીએ અને ક્ષમા કરે 🙏

જે પોતે અધૂરું જીવે અધૂરું પામે તો પણ આનંદમય 🙏

જે કેવળ મમતા જ લુટાવી જાણે 🙏

હે માં! તને પ્રણામ 🙏 પ્રણામ 🙏 પ્રણામ 🙏

અમારાં કુટુંબમાં આવો ' આત્મા '

ઓહહહ! પરમાત્મા 🙏 પરમાત્મા 🙏 પરમાત્મા 🙏

જો હું જ્ઞાની, જો હું સમજું, જો હું વફાદાર હોઉં

તો હે કુટુંબીજનો! આપણે સહું આ આત્મા ને સદા આનંદમય રાખીએ 🙏

આ જ આપણું કર્તવ્ય અને સેવા 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

तेरी बंसी का सूर मुझे बनाले श्याम

तेरे अधर पर मैं चिपक जाऊंगी

तेरे उंगली की नर्तकी बनाले श्याम

तेरी एक एक धून पर बिखर जाऊंगी

तेरे ख्यालों की तस्वीर बनाले श्याम

तेरे तिरछी नज़र नैनों में बस जाऊंगी

तेरे गीतो की धून बनाले श्याम

तेरी हर तर्ज़ संगीत में लहर जाऊंगी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्यामा ने कहा श्याम से
तु मथुरा जा रहा है
हमें छोड़ कर!
कैसे?
तुने जितना मन चुराया
तुने जितना चित्त चुराया
तुने जितना प्रेम चुराया
तुने जितनी धड़कन चुराई
तुने जितनी सांसें चुराई
तुने जितनी मधुर चुराई
तुने जितना रंग चुराया
तुने जितना संग चुराया
तुने जितना विरह चुराया
तुने जितनी यादें चुराई
तुने जितनी नांदे चुराई
तुने जितनी सादे चुराई
तुने जितना स्पर्श चुराया
तुने जितना हर्ष चुराया
तुने जितना उत्कर्ष चुराया
तुने जितनी आंचल चुराई
तुने जितनी पायल चुराई
तुने जितनी कायल चुराई
तु ही कहे
तु कैसे दूर जा सकता है?
तु चाहे तो भी तु दूर नहीं
तु धुत्कारे तो भी दूर नहीं
तु ठुकरावे तो भी तु दूर नहीं
एक क्षण तेरी
एक लक्षण तेरा
एक शिक्षण तेरा
एक प्रतिक्षण तेरा 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
तु चाहें कुछ भी समझे
तु चाहें कुछ भी करे
तु चाहे कुछ भी सोचे 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
साथ साथ
हाथ में हाथ
बाथ में बाथ 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
यही तो तेरी लीला है
यही तो तेरी शृंखला है
यही तो तेरी छबीला है 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हे प्रियतम! तु दूर नहीं है 👉🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण भक्त "

कृष्ण भक्त कौन? क्यूं? और कैसे?

कृष्ण भक्त का अर्थ ऐसा न समझना कि वह हिन्दु है 🙏

कृष्ण भक्त का अर्थ ऐसा न मानना कि वह हिन्दु धर्मि है 🙏

कृष्ण भक्त का अर्थ है वह -

वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे 🙏

परदु:खे उपकार करे तो भी मन नहीं आणे रे 🙏

सकल लोक मां सहुने वंदन 🙏

निंदा न करे कोई नी रे 🙏

क्रमशः 🙏

अर्थात जो जीव - जो मनुष्य श्री कृष्ण के जीवन सिद्धांत आधारित जीवन व्यतीत करे वह कृष्ण भक्त 🙏

जबसे जन्म पाया वहीं पल से वह प्राथमिक वैष्णव जन 🙏

यही ही मूलत्व है श्री कृष्ण भक्त का🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

" चंद्र " प्रेम की कल्पना को साकार किया 🌷

" चंद्र " शीतलता के स्पर्श को महसूस किया 👉

" चंद्र " मिलन की पराकाष्ठा पा ली 😮

" चंद्र " पुष्टि पुरुषार्थ की अलौकिक उपलब्धि 👉

" चंद्र " प्रीत का कोई भी ख्याल अवश्य पवित्र ही है 🌷

" चंद्र " सत्य और सिद्धांत का विज्ञान सदा साक्षात्कार की ही अनुभूति करवाता है 🙏

" चंद्र " द्रढ विश्वास भरा हर कदम पर मंज़िल ख़ुद ब ख़ुद स्व को समर्पित करता है 👉

" चंद्र " हर तत्व को रुपांतर कर सकते है 👉

अभिनंदन 👉🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नैन - विशुद्ध

मन - स्थिर

तन - पवित्र

धन - योग्य

जीवन - पुरुषार्थ भरा

आत्मा - प्रज्वलित

प्रेम - निरपेक्ष

धर्म - सिद्धांत

जन्म की सार्थकता यही है 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चांद को छूआ

मैंने मेरे प्रियतम के पैर छुए

चांद को निहारा

मैंने मेरी प्रीत को संवारा

चांद को पूछा

मैंने मेरे प्रेम को इशारा

चांद को कहा

मैंने मेरी उल्फत को पुकारा

चांद को छुपाया

मैंने मेरे प्रिये को बचाया

मेरा पिया चांद है

मेरी प्रेम पवित्र है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

सदा मधुर मधुर हास्य

सदा मार्गदर्शक सिद्धांत चालक

सदा करुणानिधि सत्य रीति

सदा अखंडानंद स्वराटानंद

सदा सन्मानिय संरक्षणाव्यूहा

सदा प्रेमी सदा विरही

सदा पुरुषार्थी विद्यार्थी

सदा भक्त वत्सल भक्त वर्धक

सदा मददनिश जगधाधिश

सदा संस्कृति उपासक निर्देशक

सदा प्रेमी पूजनीय सविनयी

सदा परोपकार जगदाधार

सदा प्रिये सदा ज्ञेय

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हे कान्हा!

तुझे न कोई पल भूलाया

तुझे न कोई क्षण छोड़ा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

ऐसा क्यूं?

क्यूंकि जिससे मेरा जीवन संवरें

क्यूंकि जिससे मेरा मन एक चित्ते

क्यूंकि जिससे मेरा तन पवित्रे

क्यूंकि जिससे मेरा धन योग्ये

क्यूंकि जिससे मेरा नैन विशुद्धे

क्यूंकि जिससे मेरा आत्म प्रकाशे

क्यूंकि जिससे मेरा स्वर मधुरे

क्यूंकि जिससे मेरा सांस महकें

क्यूंकि जिससे मेरा कर्ण सतेजे

क्यूंकि जिससे मेरा धर्म सेवे

क्यूंकि जिससे मेरा कर्म निरपेक्षे

क्यूंकि जिससे मेरा रंग श्यामे

क्यूंकि जिससे मुझसे प्रेम पांगरे

क्यूंकि जिससे मेरी प्रतिज्ञा पूर्णे

क्यूंकि जिससे मेरी वृत्ति सोहाये

क्यूंकि जिससे मेरी द्रष्टि समाने

क्यूंकि जिससे मेरी सृष्टि उत्कृष्टे

क्यूंकि जिससे मेरी पुष्टि शरणे

सच!

हां बिलकुल सच!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! आन बसो यह तन मन नैनन में

मेरी प्रीत पुष्टि हो गई तेरे शरणं में

कान्हा! आन जगो यह द्रष्टि में

मेरी नज़र एक हो तेरे दर्शन में

कान्हा! आन बहो यह तन धरा पे

मेरा अंग अंग गुल जाएं तेरी सेवा में

कान्हा! हे कान्हा!🌷🙏🌷

कान्हा! आन रंगों मेरे प्रेम रंग में

मेरी प्रीत लुटो हर विरह वेदना में

कान्हा! आन रुको जीवन निकुंज में

मेरी उम्र बीते तेरी घट घट लीला में

कान्हा! आन छेड़ो मधुर तान बंसी की

मेरे स्पंदन दौड़े तेरे मधुर मिलन में

कान्हा! हे कान्हा! 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नीश दिन हो ख्यालों में

कैसे छूपे रहते हो ओ मेरे प्रियतम?

सांस सांस हो बस में

कैसे छोड़ोगे दामन ओ मेरे प्रियतम?

कौन कहता है तुम बिन हूं

घड़ी घड़ी मुझसे खेल रहे हो

कैसे दूर करें तुमसे कोई ओ मेरे प्रियतम?

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

कान्हा! मेरा प्रेम है ऐसा उजागर

चाहे कोई अंधेरा भटक कर आएं

वह भी प्रेम ज्योत बन कर

मेरे साथ जाग जाग कर उजियारे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

केशवा माधवा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा!
गोविंदा हे गोविंदा
मुझे ले चलो संसार पार
मुझे ले चल जगत बाहर
केशवा माधवा
हे कृष्ण गोविंदा!

मुझे ले चल निकुंज द्वार
मुझे ले चल वृंदावन धार
मुझे ले चल वृंदावन धार
मुझे ले चल वृंदावन धार

हे कृष्ण गोविंदा!
गोविंदा हे गोविंदा
मुझे आना है गोकुल धाम
मुझे आना है प्रेमलीला गांव
मुझे आना है यमुना पार
मुझे आना है गोवर्धन धाम

हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा
हे कृष्ण गोविंदा!
गोविंदा हे गोविंदा
केशवा माधवा

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

काली अंधियारी रात्रि आ रही है

कहीं भक्तों की वेदना याचती है

कहीं पुष्टि जीवों की सेवा स्पर्शती है

कहीं ज्ञानी आचार्यो की श्रेष्ठता जागती है

कहीं वैज्ञानिक सिद्धांतों की सिद्धि प्रमेयती है

कहीं प्रज्ञानी जीवों की ढ़डता निश्चिती है

कहीं तत्वों की परिवर्तनता प्रवर्ति है

हमारे परम प्रेमी प्रियतम पधार रहे है

हमसे धर्म संस्थापने हमारे वचन निभाने

सिर पर मोर मुकुट धरें अधर पर बंसी बजाये

तिरछी नजर मिलायें पग पर पग टेडे

सदा खड़े रह कर सदा भक्त वत्सल हो कर

हमारे जीवन में प्रेमोन्माद भरने

हमारे आंगन में प्रेम लीला रचाने

हमारे तन मन धन में सुख लुटाने

हमारे आत्मा से आत्म मिलाने

जन्म जन्म की विरहता नष्ट करने

पधार रहे है पधार रहे है पधार रहे है

आओ आज से हमारे तन मन धन तैयार करें

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज " पवित्रा एकादशी " के पुष्टि प्राकट्य दिन पर सर्वे पुष्टि जीव को हमारा दंडवत प्रणाम 🙏

वैष्णव जन से वैष्णवता जगे

जगे जीवन पुष्टि मय पुष्टि जय

श्री वल्लभ श्री विठ्ठल श्री यमुना

मार्ग से मिलावे श्री गोवर्धन नाथ

एक एक सांस पुष्टि सिद्धांत जतायें

ब्रह्म ब्रह्म से परब्रह्म में समायें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक संदेश आया

एक सूचना मिली

परंपरा है 🙏

" हवेली में यह समय पर श्री ठाकुरजी को और श्री आचार्य या गुरु को पवित्रा पधराना है " 🙏

ठहरो 🙏

" पवित्रा " का अर्थ और व्याख्या समझ कर पवित्रा पधराना होता है 🙏

पुष्टि मार्ग का सिद्धांत को अनुशासित करके यह क्रिया हमें करनी है 🙏

हमें अंधे हो कर - हमें अशिक्षित हो कर एक घंटा की तरह नीची मूंड़ी करके झुकते झुकाते करते रहना दोषों से भरा है, हमारी हर समझ और क्रिया दोष निवारण होनी ही हमारी योग्यता है 🙏

पुष्टि मार्ग सिद्धांत कहता है

पहले अपने घर पधराये हुएं श्री ठाकुरजी को पवित्रा अंगीकार करना है 🙏

उसके बाद घर के हर सदस्य को यह क्रिया आचरण करवानी है 🙏

हमारे सेवकीय श्री ठाकुरजी ही हमारे प्राधान्य है 🙏 वही ही निधि स्वरुप है, हमारी आस्था और श्रद्धा विश्वास से ही है 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी ने प्रथम पवित्रा अपने सेवकीय श्री ठाकुरजी को अंगीकार करके ही श्री दामोदर हरसानीजी को शिक्षित किया और पुष्टि सिद्धांत रीति सिखाई 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" રક્ષાબંધન "

રક્ષણ નું બંધન

રક્ષણ કોણે કોનું?

રક્ષણ ની આવશ્યકતા કેમ?

મિત્રો 🌷🙏🌷

આપણી સનાતન સંસ્કૃતિ સત્ય - વિશ્વાસ અને સિદ્ધાંત નાં આધારિત છે 🙏

દરેક ક્રિયા માટે શાસ્ત્રોક્ત સિદ્ધાંત છે.

જે કેવળ આનંદ જ પ્રક્ટ કરે છે.

" રક્ષાબંધન " આ એક શાસ્ત્રોક્ત સિદ્ધાંતમય તિથિ છે - ઉત્સવ છે - સત્ય છે.

કોઈપણ જિજ્ઞાસા કરો પણ જ્યાં સત્ય અને સિદ્ધાંત છે તેને કોઈ તર્ક નથી 🙏

" રક્ષાબંધન " તિથિ અને ઉત્સવ જે સ્વીકાર્યો તેની પ્રારંભિકતા ઋષિ વેદવ્યાસે વામન અવતારમાં બતાવી - રાજા બલિ અને બ્હેન મહાલક્ષ્મી 🙏

અદભૂત સમન્વય 🙏

ભાઈ નું રક્ષણ

પતિ નું રક્ષણ

રક્ષણ નો અર્થ ખૂબજ અનોખો અને દિવ્ય છે 🙏

તકલીફ, મુસીબત, આફત, કષ્ટ, દુ:ખ, ત્રાસ, ઉપાધિ, વ્યાધિ વિગેરેથી જ રક્ષણ કરવું એવું નથી.

રક્ષણ નો અર્થ

ઉત્તમ સંસ્કાર આપવા

ઉત્તમ શિક્ષણ આપવું

ઉત્તમ સાથ આપવો

ઉત્તમ વિદ્યા આપવી

ઉત્તમ વારસો આપવો

ઉત્તમ સ્વીકૃતિ આપવી

ઉત્તમ સંબંધ આપવો 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

તન, મન, ધન તો ભૌતિક છે

જે અપેક્ષિત છે તે તો સ્વાર્થ ઉત્પન્ન કરે છે

રક્ષણ તો નિરપેક્ષિત છે 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

રક્ષણ તો પ્રેમ છે 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

આ રક્ષણ ને એક એવા સૂત્ર થી બાંધવા માં આવવાથી કેવળ

નિઃસ્વાર્થ, નિ:સંદેહ, નિ:સંશય જ પ્રક્ટ થાય 🙏

કેવો અદભૂત અને અનોખો ઉત્સવ 🙏

ન કોઈ ભેંટ - ન કોઈ માંગ - ન કોઈ ચંચળતા🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

આ સત્ય અને સિદ્ધાંત થી આ ઉત્સવ ઉજવીએ તો અચૂક આનંદ આનંદ અને આનંદ 👍

ચોક્કસ પ્રયત્ન કરો 🙏

Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું
ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું
ઓ વલ્લભ! મારી પાસે આવી જા તું

અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ

ફરી ક્યારે મળીશું?
ફરી ક્યારે મળીશું?

શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું

આવું કેવું વચન, આમ કેમ કહો છો?
મારે જીવવું છે શ્રી વલ્લભ સિદ્ધાંતે
મારે રહેવું છે શ્રી વલ્લભ પારાયણે
ઓહહહ!
તો પહેરીએ કંઠી બ્રહ્મ સંબંધ ની
તો મંત્ર સ્વીકારીએ શ્રી કૃષ્ણ શરણં મમઃ નો
આજે નહીં આવતા જન્મે
ચાલો જલ્દી જલ્દી જઈએ
કેમ કેમ? આ તો એક બહાનું છે
નવો જન્મ અમારે પામવાનો છે
ચાલો જલ્દી શ્વાસ ઘટી રહ્યાં છે
ઓહહહ!
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
અચ્છા! તો અમે જઈએ છીએ
ફરી ક્યારે મળીશું?
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
શ્રી વલ્લભ જ્યારે પધારશે ત્યારે મળીશું
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

दूर दूर और दूर है दुलारी ब्हना
नन्हीं सी प्यारी सी है छोटी ब्हना
चाहे! वह दूर हो चाहे वह पराई हो
पर घड़ी घड़ी ही पास है प्यारी ब्हना

खो गई अपने जीवन में
डूब गई अपने कुटुंब में
पर
सदा छूएं अपने भाई से
दूर से भी खोयें भैया की राह में

एक नन्हा-सा धागा सूत का
दूर से भेजें भैया की रक्षा वास्ते
चाहे वह देश रहे परदेश रहे
आत्मा के तांतणें से बांधे प्रेम रिश्ते

हे ब्हना! मेरी दुलारी ब्हना 🙏
हे ब्हना! मेरी प्यारी ब्हना 👆
तु दूर हो तो भी तेरा भैया तेरे पास है
तु कहीं भी हो तो भी तु मेरे दिल में हो

कोई की ब्हना कोई का भैया
दूर दूर से भी कहीं दूर हो
पर
है सदा निकट आत्मा आत्मा से एकट
प्रेम के धागे से सदा रिश्ता है प्रक्ट
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज सदा स्थिर है

पृथ्वी सदा घुमती है

अर्थात ब्रह्मांड के मूल स्थिर है

जो मूल नहीं वह घुमते है

जो मूल नहीं वह परिवर्तन होते है

बस! राधा का प्रेम स्थिर था🙏

बस! आत्मा सत्य स्थिर है🙏

चाहे मन से कितना घुमाओ

चाहे तन से कितना घुमाओ

चाहे धन से कितना घुमाओ

चाहे जन्म से कितना घुमाओ

पर

प्रेम में और प्रेम से स्थिरता है

चाहे कितना छल कपट करो

प्रेम की स्थिरता से ही प्रेम में श्याम सुंदर आयेगा

प्रेम की मधुरता से ही प्रेम में राधा विरह आयेगा

यही सुंदर और विरह ही परमानंद है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ख्यालों में खोयें प्रेम स्पंदन

यादों में आयें प्रेम स्पंदन

पलक में जागे प्रेम स्पंदन

नजर में झुकें प्रेम स्पंदन

हे प्यार! तु ही कहें दिल क्या करें!

गोपी ऐसी रहे

राधा ऐसी रहे

मीरा ऐसी रहे

प्रिये ऐसी रहे

सच कहना कान्हा!

तु कहीं भी हो - ऐसा ही हो!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

आंखें - कितनी अलौकिक, अनोखी और अदभुत 👆

जैसे पलकें खुलें

ओहहह: रंग संग उमंग

जैसे पलकें झुकें

ओहहह! बसा छूपा खोया

फ़िर

द्रष्टि द्रष्टि सृष्टि सृष्टि

विचार विचार नजर नजर

घड़ी घड़ी क्षण क्षण

कदम कदम डग डग

रज रज बूंद बूंद

आरंभ आरंभ प्रारंभ प्रारंभ

चलना चलना चलना

दौड़ना दौड़ना दौड़ना

नहीं कोई रुकावट

नहीं कोई थकावट

बस! चल चल अचल

बस! खल खल सखल

आख़री सांस तक

आख़री आकांक्षा तक

आख़री जिज्ञासा तक

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

है न अलौकिक - है न अनोखी - है न अदभुत 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! ओ कान्हा!

तु मेरी रुह में

तु मेरी सांसों में

ऐसी है प्रीत हमारी

जबसे तु गया गोकुल से

तेरी यादों की विरह में

डूब गई मैं

जैसे मधुर जल में गागरिया

हे श्याम! ओ श्याम!

तु मेरे नैनों में

तु मेरे आंचल में

ऐसी है उल्फत हमारी

जबसे तु गया वृंदावन से

तेरे ख्यालों के सूर में

भटक गई मैं

जैसे पी के अधर से बांसुरिया

हे प्रियतम!

मैं क्या करूं 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" कलयुग "
कलयुग का अर्थ है जो जीव में अज्ञानता, मूढ़ता, अविवेक, अंधश्रद्धा, द्वेष, धूर्तता, नग्नता, अतृप्ति, अधमता, दुष्टता, मूर्खता, जटिलता, भ्रमितता, असत्यता, विघटनता, क्रुरता, विलासता, निर्लज्जता, निरर्थकता, व्यभिचारी, पापी, घृणा, नपुंसकता, लंपटता, अराजकता, आदि जो मन तन धन और जीवन को दु:खदायक, कष्टविधायक, विपत्तिआशक, दगाबाज, रोगरोधक, समय पातक हो जाता है।

वह खुदगर्ज, कपटी, लुच्चीत्ता, नफटता, नीचता से अपना जीवन को समृद्ध और शक्तिशाली और प्रभावशाली और विकासमय समझता है।

अपने आपको श्रेष्ठी, उद्यमी, उत्तम और सुखमय, धन भंडारी जीव मानता है।

हे मेरे साथ जी रहे ऐसे जीव! नहीं नहीं 🙈
हम क्यूं अपने आपको विश्वासमय नहीं कर सकते !🙈
हम क्यूं अंधश्रद्धा का सहारा लेकर अपने आपको अयोग्य करे! 🙈
हम क्यूं अपनी द्रष्टि को गंदी करे ! 🙈
हम क्यूं हमारे विचार को भ्रष्ट करे! 🙈
हम क्यूं हमारी क्रिया को विचलित करे !🙈
हम क्यूं हमारे लहूं को पापी करे! 🙈
हम क्यूं हमारे अन्न को दूषित करे! 🙈
हम क्यूं असत्य के सहारे अपने आपको घड़े! 🙈
हम कैसे निपुण हैं जिसमें केवल बनावट हो! 🙈

मेरे मित्र! हमसे समय है, समय सदा नि:कलंक है, असंशयी है, असंयमी है, विशुद्ध है, पवित्र है, विश्वनीय है 🙈

हमसे हैं जमाना!
हमसे हैं संसार!
हमसे हैं दुनिया!
हमसे हैं तकदीर!
हमसे हैं तस्वीर!
🌷🙈🌷🙈🌷🙈🌷🙈🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

संस्कार ही

अपराध रोक सकते हैं,

सरकार नहीं।

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं।

💞

Vibrant Pushti:

મારાં કુટુંબીજનો 🙏

આપણે સહુંએ શિક્ષા પ્રાપ્ત કરી અને જીવન જીવવાની યોગ્ય સમજ કેળવી. આજે આપણે એટલું તો ચોક્કસ ઓળખી શકીએ છીએ કે સત્ય શું? સંસ્કાર શું? આપણે કેવું તૈયાર થવું?

કુટુંબનાં સભ્ય છે

સમાજનાં સભ્ય છે

સંસારનાં સભ્ય છે

જીવનનાં સભ્ય છે

આપણે કેવું બનવું, રહેવું, પામવું, જીવવું અને જીવવા દેવું તે સ્વતંત્ર રીતે પોત પોતાના જ હાથમાં છે.

આપણે જ નક્કી કરવાનું છે કે મારાથી ન કોઈ અસંતોષ, ન કોઈ ગૈર સૈદ્ધાંતિક રીત, ન કોઈ અસંસ્કારી ક્રિયા કે ન કોઈ તકલીફ આવે.

જેનું કુટુંબ યોગ્ય, સૈદ્ધાંતિક, સંસ્કારી અને શિક્ષિત તે કુટુંબ સદા સાથ સાથ જ આનંદ કરે 🙏

આપણે ભાગ્યશાળી છે કે આપણે આ પ્લેટફોર્મ પર ઉભા છે. જેમાં કેવળ સકારાત્મક અને નિસ્વાર્થ સમજથી, સંપૂર્ણ પણે નિખાલસતાથી રહીએ તો કોઈ ને કોઈ તકલીફ જ ના પડે અને કોઈ મુંઝાય જ નહીં. 🙏

સંસારમાં ઘણાં ઘણાં પ્લેટફોર્મોનાં ઉદાહરણ લઈએ તેનાં કરતાં આપણે જ આપણી રીતે નક્કી કરીને જીવીએ તો કેવું?

સર્વે ને સ્વતંત્રતા છે, અધિકાર છે નક્કી કરવામાં 👍

સહું તેનો ઉપયોગ કરી નિખાલસતાથી કુટુંબમાં ચર્ચા કરી સાથે રહે અથવા અલગ રહી જ શકે છે.

જાતે જ નક્કી કરો👍

ઉત્તમ ચકાસણી વ્યક્તિની અને વ્યક્તિત્વની 🌹🙏🌹

" जन्म " " जन्म घड़ी " " जन्मदिन "

हम हिन्दु संस्कृति धरे हुए मनुष्य, हम हमारे धर्म संस्थापक श्री कृष्ण को परब्रह्म परमात्मा समझते हैं 🙏 श्री परमात्मा का जन्मदिन अर्थात हमारा प्रेमास्पद का परमानंद प्रक्ट दिन को हम आनंद आनंद और आनंद उत्सव मनाना और उसमें आनंद लुटाना 👈

" नंद घेर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की "

हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की "

आनंद आनंद आनंद और आनंद

अनोखा दिन - अलौकिक दिन - प्रेमामृत दिन

हर कोई के मन में श्री कृष्ण जागे

हर कोई के तन में श्री कृष्ण उमड़े

हर कोई के नैन में श्री कृष्ण झांकें

हर कोई के रंग में श्री कृष्ण उमंगें

सेवा में श्री कृष्ण स्पर्शे

दौड़े श्री कृष्ण दर्शनें

नाचें श्री कृष्ण आनंदे

हैये श्री कृष्ण प्रेमे

नैनों में श्री कृष्ण रमे

अधरों पर श्री कृष्ण रटे

अंगे श्री कृष्ण स्पंदने

मन में श्री कृष्ण अवतरे

दिल में श्री कृष्ण पधराये

" जन्माष्टमी " की आनंद कामनाएं 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तु आ रहा है

तु आ रहा है

तु आ रहा है

हां! आ रहा हूं

हां! आ रहा हूं

हां! आ रहा हूं

प्रेमी की पुकार से

सखी की गुहार से

सखा की जुहार से

भक्त की प्रार्थना से

विरहन की तड़प से

मिलन की तरस से

सेवक की सेवा से

जीव की याचना से

वैष्णव की वेदना से

आत्मा की आनंद से

प्रियतम की लीला से

प्रेम की पूर्णता से

पधारो म्हारे आंगन मेरे श्री कृष्ण

आओ म्हारे नैनन मेरे श्री कृष्ण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मां! ओ मां!

मां! ओ मां!

मुझे आना है तेरी गोद में

मुझे आना है तेरे आंचल में

मुझे आना है तेरे आंगन में

तु अपने आपको ऐसी मैया बना दें

तु अपने आपको ऐसी गोकुल बना दें

तु अपने आपको ऐसी यमुना बना दें

मुझे माखन मिसरी लुटाना है

मुझे आनंद आनंद बरसाना है

मुझे गोवर्धन को रक्षण में धरना है

मुझे व्रज रज में प्रेम रस भरना है

मुझे घर घर दु:खकी बेड़ियां तोड़नी है

मुझे हर जीव में गोपी रुप घोलना है

मुझे धर्म संस्थापना करना है

मां! ओ मां!

मैं आऊं! मैं आऊं!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने दर्शन पाएं

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने अनुभूति पाई

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने स्पर्श पाया

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आशा पूर्ण हुईं

🌷🙏🌷 आज कहींओ की श्रद्धा बढ़ी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आस्था जुड़ी

🌷🙏🌷 आज कहींओ ने आनंद पाया

🌷🙏🌷 आज कहींओ की दूरी दूर हुई

🌷🙏🌷 आज कहींओ का चैन लुटा

🌷🙏🌷 आज कहींओ की प्रीत बंधी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की विरहता पूरी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की आश बंधी

🌷🙏🌷 आज कहींओ की प्यास बुझी

🌷🙏🌷आज प्रिये के प्रियतम आ रहा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

पधारो मेरे आंगन 🙏

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

मलक मलक मुस्काएं गोकुल के गोपाल

एक एक गोपी एक एक गोपाल

दौड़े नंद के आंगन

गाएं जय जय गोपाल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

पंखी सुनाएं मधुर मधुर टहूंके

गौएं खन खनाएं घुंघरू रुमझुम

नाचें हर कोई गौवाल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

यमुना की उर्मि आनंद बौछारें

गोवर्धन की शिला तेज बिखराएं

व्रज रज उड़े सलिल

पधारे नंद लाल पधारे यशोदा बाल

नंद घेर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की

हाथी घोड़ा पालकी जय हो नंद लाल की

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आपके घर पधारे नंद लाल की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हे कान्हा!

नहीं कठिन डगर है तेरे मिलन की

जितनी कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें नैनों में बसा कर पूरा जीवन बिताऊं

यह जीवन में यहां वहां संशय

कैसे मिटाऊं नजर

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें स्मरण में गूंज कर सारा जीवन गुनगुनाऊं

यह जीवन में यहां वहां निंदा

कैसे मिटाऊं कोलाहल

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

तुम्हें मन में जगाएं सारा जीवन मधुराऊं

यह जीवन में यहां वहां कुमति

कैसे मिटाऊं कटुता

बहुत कठिन डगर है जीवन जीने की

हे प्रभु!

तेरे ही आशरे तेरे ही सहारे स्व स्व जगाऊं

चाहे जीवन हो घड़ी घड़ी अज्ञान

कष्ट मिटाऊं प्रेमसे

बिछाऊं श्याम डगर जीवन जीने की

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

कौन थक सकता है यह धरती पर

कौन हार सकता है यह धरती पर

कौन खो सकता है यह धरती पर

कौन भटक सकता है यह धरती पर

कौन डर सकता है यह धरती पर

कौन भाग सकता है यह धरती पर

कौन तुट सकता है यह धरती पर

कौन फूट सकता है यह धरती पर

जो आत्मविश्वासी न हो

जो मन स्थिर न हो

जो नैन विशुद्ध न हो

जो तन पवित्र न हो

जो धन विवेकी न हो

जो धर्म सैद्धांतिक न हो

जो जीवन संस्कारी न हो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! एक नज़र क्या मिल गई राधा के नैनों से

न कभी यह नैना मूंदे न बंध हुए

कितनी भी उम्र बीत गई

कितना भी समय कट गया

गोकुल से मथुरा

मथुरा से द्वारका

द्वारका से गोलोक

एक घड़ी न तु बिसराई

एक घड़ी न तु बिछडाई

कितनी रानी हो गई

तु कदी न भूलाई

प्रीत की सच्चाई

मेरे अंग अंग जलाई

आत्मा से परमात्मा सगाई

हे राधा! तु ही प्रेम समाई

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सजन रे झूठ मत बोलो "

ओहहह! हम अपने आपको " सजन " कहे - कहलाते - कहलायें तो तो हमें झूठ बोलना ही नहीं है - झूठ बोल ही नहीं सकते - झूठ को तुरंत रोक सकते है, टोक सकते है, चूप कर सकते है 🙏

अगर हम " सजन " नहीं है तो?

तो तो पैदल चल कर जो कर्म का सैद्धांतिक फल पाते हो उसे स्वीकार कर, यहां सबकुछ छोड़कर, जीवन चक्र में जीते रहो 👍

न कोई साथ - न कोई हाथ - न कोई पाथ

चाहे कितनी भी ऊंची उड़ान भरो पर सबकुछ झूठा 🙏

न सलामती - न शांति - न शक्ति

वैर, धृत्कार, नफरत, रोग, दु:ख

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

न झूठ बोलो - न झूठ कहेलावो, न झूठ सुनो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे तत्व में तु " कृष्ण "

मेरे नैनों में तु " कृष्ण "

मेरी नज़र में तु " कृष्ण "

मेरे अश्रू में तु " कृष्ण "

मेरे मन में तु " कृष्ण "

मेरी ख्याल में तु " कृष्ण "

मेरे विचार में तु " कृष्ण "

मेरे स्मरण में तु " कृष्ण "

मेरी जिज्ञासा में तु " कृष्ण "

मेरी क्रिया में तु " कृष्ण "

मेरे कर्म में तु " कृष्ण "

मेरे संकल्प में तु " कृष्ण "

मेरे ज्ञान में तु " कृष्ण "

मेरे चित्त में तु " कृष्ण "

मेरे ध्यान में तु " कृष्ण "

मेरे अधर पर तु " कृष्ण "

मेरे स्वर में तु " कृष्ण "

मेरी जिह्वा पर तु " कृष्ण "

मेरे वचन में तु " कृष्ण "

मेरे सांस में तु " कृष्ण "

मेरे उच्छवास में तु " कृष्ण "

मेरी मात्रा में तु " कृष्ण "

मेरे अन्न में तु " कृष्ण "

मेरे जल में तु " कृष्ण "

मेरे मुख पर तु " कृष्ण "

मेरे अंग में तु " कृष्ण "

मेरे आंचल में तु " कृष्ण "

मेरे आंगन में तु " कृष्ण "

मेरे रंग में तु " कृष्ण "

मेरी सुगंध में तु " कृष्ण "

मेरी धड़कन में तु " कृष्ण "

मेरे दिल में तु " कृष्ण "

मेरे प्राण में तु " कृष्ण "

मेरी भक्ति में तु " कृष्ण "

मेरे हस्त पर तु " कृष्ण "

मेरे कदम में तु " कृष्ण "

मेरे धर्म में तु " कृष्ण "

मेरे अर्थ में तु " कृष्ण "

मेरे मर्म में तु " कृष्ण "

मेरी शक्ति में तु " कृष्ण "

मेरे धन में तु " कृष्ण "

मेरे वरण में तु " कृष्ण "

मेरे करण में तु " कृष्ण "

मेरे काम में तु " कृष्ण "

मेरी पूरण में तु " कृष्ण "

मेरे प्रेम में तु " कृष्ण "

मेरी प्रीत में तु " कृष्ण "

मेरे जीवन में तु " कृष्ण "

मेरे परिवर्तन में तु " कृष्ण "

कृष्ण! हे कृष्ण! कृष्ण! तु ही क्यूं?

क्यूंकि की उन्होंने हर रीत, नीत, हित, क्षित, प्रीत से सर्वत्र पूर्णतः है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! हे प्यार! अभी वही दर्द है

अभी वह दीवानगी है

जो कभी तेरी बंसी पर दौडता था

पर जबसे तु राजा बन गया

तो मैं गौवाल बन गया

आज भी वही गोवर्धन पर गैया चराता हूं

क्यूंकि मुझे पता है

की तु आयेगा एक दिन गौचाराहा हो कर

और

तु ढूंढ़ेगा सखा बचपन के

मैं ही मिलुंगा वह यमुना निकुंज तट

जहां तु पायेगा एक दुपट्टा पीला

जो यादें दिलायेगा ऐसी प्रीत की

जो कहती है

मेरी प्रीत से चाहे कर लो मन चाही दूरी

पर यह सखा तो यूं ही है

जो तेरी राधा तुझमें जगा दे ❦

सत्य का सिद्धांत ऐसा अवश्य है

कि शिक्षित होना और जो ज्ञान विषय की निपुणता में ही साथी हो तो जीवन मधुर हो जाएं

बाकी जीना तो भरोसा पर निर्भर होता रहता है पर मधुर करने के लिए एक मन, एक चित्त, एक भक्ति, एक नीति, एक वृत्ति, एक कृति और एक समीक्षा तो अवश्य होनी चाहिए 🙏

भगवान पर निर्भर

नसीब पर निर्भर

समय पर निर्भर

धन पर निर्भर

रुप पर निर्भर

से भी उत्तम शिक्षा ही है - शिक्षा है तो ही संस्कार है - संस्कार है तो ही धर्म है और धर्म है तो ही आनंद है

चिंतन से कहे

साथी समकक्ष ही होना चाहिए

अगर कोई कहे कि साथी भगवान तय करते है

नहीं नहीं

अगर ऐसा होता तो श्री कृष्ण जो परब्रह्म है उनका साथी राधा ही क्यूं?

क्यूंकि उन दोनों की सक्षमता, समानता, समांतरता और शिक्षात्मकता एक ही थी 🙏

सोच लो 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो न बन सके वह तु आश है

जो न खत्म हो सके वह तु प्यास है

प्यार की कैसी यह तन्हाई

जो जनम जनम से तेरी सांसों से

भटक भटक कर तेरी आसपास हूं

😌

हे कान्हा! तु इतना कठोर है

जो मेरी एक आह भी तुझे नहीं छूती?

पर

एक बात कह देती हूं

तु कितना भी विरह दे दे

मैं तुम्हें अवश्य पाऊंगी 🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मां " मां तु और घडपण!

नहीं नहीं!

मां कभी भी पौढ़ नहीं हो सकती 🙏

मां कभी जर्जरित नहीं हो सकती 🙏

मां कभी लाचार नहीं हो सकती 🙏

मां कभी अपमानित नहीं हो सकती 🙏

मां कभी मर नहीं सकती 🙏

मां कभी तुट नहीं सकती 🙏

मां कभी बिखर नहीं सकती 🙏

मां अमर है🙏

मां अमृत है 🙏

मां अद्वैत है 🙏

मां की चाहें कितनी भी उम्र हो

मां सदा युवान है 🙏

शायद हमारी उम्र ८० साल की हो तो भी मां की उम्र ४० ही है 🙏

मां को हम डस्ट बिन समझे! नहीं नहीं 🙏

मां का भार हमारी पर हो! नहीं नहीं 🙏

मां का भार ही नहीं होता है और मां का भार कभी लगता ही नहीं है 🙏

अगर जब मां को ऐसा लगे कि मेरे कुटुंबी जनों को मां बोझ लिए या अयोग्य लगे!

अवश्य समझना हम बरबाद हो रहे है

हम दानव हो रहे है

हम निर्धन हो रहे है

हम अधर्मी हो रहे है

हम विदोषी हो रहे है

हम निशाचर हो रहे है

हम नामर्द हो रहे है

हम विकृत हो रहे है

हम अयोनी हो रहे है

" मां " कभी कष्ट नहीं देती

अगर

कोई स्त्री " मां " रुप है तो भी वह तिरस्कृत नहीं कर सकते 🙏

पर

कोई स्त्री " मां " स्वरुप है तो अवश्य वह भगवान है 🙏
अगर किसीको हो या अनुभवे या लगे" मां " मेरे लिए विकृत है तो वह " मां " नहीं पर कोई कर्म का फल है
बाकी " मां " न कोई फल है - न कोई विघ्नकर्ता है - अलभ्य है - अयोग्य है🙏
" मां " उत्तम, सर्वोत्तम, पूर्णोत्तम, पुरुषोत्तम है 🙏
" मां " न संशय - न संकोच, न उद्वेग, न परिस्थिति है, न प्रतिरोधक है, न कोप है, न भोग है, न रोग है, न क्षोभ है, न लोभ है, न संदेह है 🙏
" मां " सिद्धि हैं
" मां " धात्री है
" मां " पवित्र है
" मां " विश्वास है
" मां " सत्य है
" मां " प्रेम है
" मां " आनंद है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" मां " तुम्हें वंदन🙏 तुम्हें नमन 🙏 तुम्हें प्रणाम 🙏 तुम्हें दंडवत 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

संस्कृति के पुरुषार्थ एक एक रज है

जो एक एक उत्तम नींव को जोड़ती है

वह नींव ऐसे चरित्र से परिपक्व है

जो हर स्पर्श संस्कारों से सिंचित है

यह संस्कारों का तेज ऐसे सिद्धांतों से गुथ्थै है

जो हर सिद्धांत सत्य की आधारशिला है

यह आधारशिला योग्य जीवन की नीति पर है

जो नीति समय समय के अनुभव का निचोड़ है

यह अनुभव ऐसे संजोग और परिस्थितियों से है

जो हर संजोग और परिस्थिति में स्व भूमिका की निपुणता है

यह भूमिका ऐसी शिक्षा से प्रदीप्त है

जो धर्म और कर्म के नियमों में संशोधन है

जीवन जीते हर मनुष्य की योग्यता प्रमाणित है

यही उत्तम जीवन की सार्थकता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

मेरे लिए हवेली मंदिर बनाएं
मेरे लिए सत्संग भवन बनाएं
मेरे लिए कीर्तन स्थली बनाई
मेरे लिए गौशाला बनाई
मेरे लिए यात्रा धाम बनाएं
मेरे लिए धर्मशाला बनाई
मेरे लिए उत्सव बगीचे बनाएं
मेरे लिए स्नान पर्व ओवारे बनाएं
मेरे लिए भजन धून पथ बनाएं
मेरे लिए परिक्रमा मार्ग बनाएं
मेरे लिए प्रसाद कक्ष बनाएं
मेरे लिए सेवा पूजन बैठक बनाई
मेरे लिए प्रार्थना भवन बनाएं
मेरे लिए यज्ञ शालाएं बनाई
मेरे लिए शास्त्रों विवेचन पुस्तकालय बनाएं
मेरे लिए धर्म सभा समाज बनाएं
मेरे लिए एकांतिक शांति भवन बनाएं
मेरे लिए पाठशालाएं बनाई
अदभुत! कितना भाग्यवान हूं मैं की मेरे उत्थान के लिए अनोखी और उत्तम व्यवस्था है 🌹🙏🌹
हां! 🌹🙏🌹
अवश्य! अदभुत! अलौकिक!👈
शांति - प्रेम - आनंद और संस्कार और संस्कृति
अवश्य कहना 🙏 आपके पास समय है?
शांति - अपनी स्थिरता से है🙏
प्रेम - अपनी योग्यता से है🙏
आनंद - अपनी आत्मीयता से है🙏
संस्कार - अपने चारित्र्य से है🙏
संस्कृति - अपने धर्म से है🙏
सोच लो! 🌹🙏🌹
Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

मन की स्थिरता

मन की एकाग्रता

मन की विशिष्टता

मन की मुग्धता

मन की क्षमता

मन की योग्यता

मन की आध्यात्मिकता

मनुष्य का जीवन उत्तम, उच्च, श्रेष्ठ और मधुर बनाता है 🌷

क्षण क्षण मन के परिपक्वता की कसौटी है

यह कसौटी संसारमय से

यह कसौटी प्रकृतिमय से

यह कसौटी सृष्टिमय से

यह कसौटी आध्यात्ममय से होती रहती है

हम मनुष्य को क्षण क्षण परिवर्तन में जागृत रहना होता है

कब क्या हो वह सुद्रढ करने मनको विद्यामय - संस्कारमय - आध्यात्ममय धाराओं से सिंचित करते ही रहना हमारी सर्वोत्तमता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संभावना " कभी यह शब्द को पहचानने की कोशिश की है?

जन्म जन्म इन पर

जीवन जीवन इन पर

भगवान भगवान इन पर

प्रेम प्रेम इन पर

कितना अनोखा और अदभुत शब्द है 🙏

जितनी भी गहराई में जाना हो - जाओ

कितना भी पुरुषार्थ कर लो - करो

कितना भी ज्ञान पा लो - पाओ

कितनी भी भक्ति छू लो - छूओ

अदभुत 🙏 अनोखा 🙏 अवर्णनीय

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

यमुना के तीर चले
चले यमुना के तीर
एक एक लहर कहें
यहीं है प्रेम संगीत

कान्हा की बंसी बाजे
राधा की गूंजे पायल
मधुर मधुर सूर जागे
यहीं है प्रेम संगीत

रुमझुम रुमझुम गोपी नाचें
धडम धडम मटकी फूटें
प्रीत रीत के गीत गूंजें
यहीं है प्रेम संगीत

हे राधा! हे कान्ह! हे प्रिये!
पुकार पुकार से सृष्टि जागे
खेल कूद में धरती खिलें
यहीं है प्रेम संगीत

घड़ी घड़ी ठहरें
क्षण क्षण रुकें
धारा धारा उभें
यहीं है प्रेम संगीत
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कल भी था मधुर
आज भी है मधुर
आगे भी होगा मधुर
अलौकिक है प्रेम संगीत
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे यमुना! तेरे स्मरण से
हे यमुना! तेरे ख्यालों से
हे यमुना! तेरे विचारों से
उठें तरंग प्रेम संगीत
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे महेबुब! मेरे महेबुब!

तुने ये क्या कर दिया

आकाश का चांद भी धुंधला दिखाई दिया

गिरते झरना की शीतलता गर्म लगने लगी

धरती की हरियाली लाल हो रही

लहराता पवन अपनी महक खोने लगा

तुझमें ऐसा क्या है? जो मैं तुझमें समानें लगा🌷

तु गोपी है?

तु मीरा है?

की तु राधा है?

तेरी प्रेम लीला से मैं नहीं जन्म ले सकता हूं

तेरे विरह की वेदना से मैं मृत्यु नहीं पा सकता हूं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे प्रिये! मैं क्या करूं 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने आपको तुमने ऐसा बनाया

अपने आपको खुदने ऐसा बनाया

अपने आपको स्वने ऐसा बनाया

संजोग जो तुमने जैसा गुज़ारा वैसे तुम

परिस्थिति जो खुदने जैसी निभाई वैसे तुम

समय जो स्वने जैसा गूंथा वैसे तुम

संजोग कैसे बनें? कोई जीत गया

परिस्थिति कैसे बनीं? कोई पार गया

समय कैसा बना? कोई जूझ उठा

संजोग - जैसे तुमने जीना गुज़ारा

परिस्थिति - जैसे तुमने मन बनाया

समय - जैसे तुमने शिक्षा स्वीकारा

तुम्हारी साथ के संजोग गुजारें

तुम्हारी साथ के परिस्थिति निभाएं

तुम्हारे साथ के समय पसारें

कोई कहीं है कोई कहीं है

कोई ऐसे है कोई ऐसे है

कोई कुछ है कोई कुछ है

क्यूं मैं ऐसा?

यहीं संजोग - परिस्थिति और समय को समझ कर अपने आपको जगा दो और घड दो सैद्धांतिक नियमन

पहुंचते है सही

पाते है सही

हो गएं सही जीवनी 🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

इसे कहते है प्रेमी 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

आ रही है वह घड़ी जो

मेरे मन को मोड़ना है 🙏

मेरे नयन को बिखरना है 🙏

मेरे अधर को सूर बहाना है 🙏

मेरे हस्त को लुटाना है 🙏

मेरे पैर को कदम भरना है 🙏

मेरे अंग को शुद्ध करना है 🙏

मेरे प्राण को आधार देना है 🙏

मेरे हृदय के तेज को जगाना है 🙏

मेरे दिल को प्रेम रंग से रंगना है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा " का आनंद उमंग रंग संग 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सर्वे व्रज परिक्रमा भक्तों को प्रणाम 🙏

" व्रज परिक्रमा "

हिन्दुस्तान के हर कोई व्यक्ति के मुख में यह स्थली सदा गूंजती रहती है 🌷

जो कोई व्यक्ति का जन्म हिन्दू धरती पर हुआ हो और वह यह स्थली को छू कर ही रहेगा 🌷

हिन्दुस्तान के हर व्यक्ति का संकल्प है - व्रज रज पाने का 🌷

कोई कैसी भी कक्षा के हो

कोई कितने भी तवंगर हो

कोई कैसी भी परिस्थिति का हो

व्रज व्रज और व्रज जायेगा

व्रज रज छूएगा 🌷

अनोखी अलौकिक अवर्णनीय अदभुत स्थली - व्रज 🌷🙏🌷

कोई तो ऐसा कहें

" व्रज भाएं ऐसा जो न मुझे चाहें दो मनभावन ऐसा

न छोड़ू व्रज कहीं से

न छोड़ू व्रज हर घट से

मुझे दिजो व्रज में वास मैं वैकुंठ नहीं चाहूं 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अरि ओ! हो हो हो हो हो
प्यार की ऐसी विरहता जलाती है
हर तरफ आग ही आग है
आंखें खुलें तो अगन अगन
आंखें मुंदे तो जलन जलन
आंखें झुकें तो सुलग सुलग
आंखें बंद तो ज्वाला ज्वाला
प्यार का अग्नि भारी
जिससे हूं वारी वारी
दूर है बहुत दूर है
उनके साथ यमुना है
उनके साथ गोवर्धन है
उनके साथ गोकुल है
उनके साथ सखी है
उनके साथ सखा है
उनके हाथ बंसरी है
मैं अकेला भटक भटक रहूं
कभी मथुरा तो कभी द्वारका
कभी कहीं तो कभी वहीं
पर इतना अवश्य कहूं
वह मेरा रंग है
वह मेरा उमंग है
वह मेरे संग है
वह मेरे अंदर है
तभी तो मैं कृष्ण हूं
राधा! राधा! राधा! राधा!
अपने अंदर निहालो - राधा 🌷🙏🌷
राधा! राधा! राधा! राधा!🌷🙏🌷
प्रक्ट भयी प्रिये! 🌷🙏🌷
हे प्रियतम प्रिये! 🌷🌷🌷
राधा! 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
"Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

कहींओ ने कहीं अनुभव पाये है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं स्पर्श पाया है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं योग्यता पायी है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं सेवा जगाई है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं रंग रंगाएं है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं ज्ञान पाएं है व्रज परिक्रमा में 🙏

कहींओ ने कहीं भाव पाये है व्रज परिक्रमा में 🙏

व्रज परिक्रमा का ख्याल और विचार श्री वल्लभाचार्यजी कि अनोखी अनुकंपा है कि जीव व्रज परिक्रमा करे 🙏

पुष्टिमार्ग का हर सिद्धांत का प्रमाणित जागृतता - " व्रज परिक्रमा " 🌷🙏🌷

श्री श्रीनाथजी और श्री यमुनाजी की लीलाएं का दर्शन - " व्रज परिक्रमा "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

અતિ અસંવૈધાનિક
અતિ બિનસૈદ્ધાન્તિક
અતિ ગૈરજિમ્મેદાર
અતિ નિષ્ક્રિય
અતિ લાચારી
અતિ ધૂર્તતા
અતિ અપ્રમાણિક
અતિ દ્રષ્ટિહીન
અતિ દુરાચારી
અતિ જુઠ્ઠાણું
અતિ અસહિષ્ણુતા
અતિ મજબૂર
અતિ લોભી
અતિ અજ્ઞાની
અતિ સ્વાર્થી
અતિ અશિસ્ત
અતિ અપરાવલંબી
અતિ આળસુ
અતિ આડંબરી
અતિ અશિક્ષિત
અતિ દ્રોહી
અતિ દોષિત
અતિ નિમ્ન
અતિ વિરુદ્ધ
અતિ અવિવેકી
અતિ બેશરમ
અતિ સંશયી
અતિ બેરહેમી
અતિ અવિશ્વાસુ
અતિ નિર્લજ્જ
અતિ ધૃણિત
મને લાગે છે કે જેટલા અવગુણો છે તે સર્વે અતિ અતિ માં પણ જો કોઈ એવું વ્યક્તિ કહે " હું આનંદિત છું 👈 " તો સમજવું કે તે કેવળ હિન્દુસ્તાની છે 🙈
જબરદસ્ત ઉપાધિ 🙈
જબરદસ્ત જીવન 🙈
જબરદસ્ત સમૃદ્ધ 🙈
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🙈🌹🙈

" व्रज परिक्रमा "

हर्षोल्लास - आनंद परमानंद - आत्मा परमात्मा - प्रेम प्रेमास्पद

जबसे समझता हुआ तबसे एक संकल्प मन से किया था - " व्रज परिक्रमा "

आजतक जो पुष्टिमार्ग में श्री वल्लभाचार्यजी और श्री गुसाईजी के ब्रह्म संबंध से जो शिक्षा पाई वह चरितार्थ करने वह तिथि आ गई - वह दिन आ गया

भाद्र सुद अगियारस - संकल्प करना है

मेरे जीवन यात्रा की आध्यात्मिक और आत्मीय स्पर्शी यात्रा जिससे यह जीव का परिवर्तन " पुष्टि जीव " में होगा

मुझे संकल्प लेने की घड़ी से आख़री घड़ी तक केवल श्री वल्लभाचार्य विरचित पुष्टिमार्ग का हर सिद्धांत से हर सांस भरनी है और हर कदम दासत्व की तरह व्यापन करना है

जीवन की मधुर क्षण - जन्म का संस्कारी पुरुषार्थ पुष्टि पुष्टि और पुष्टि

मैं कितना भाग्यवान हूं कि श्री वल्लभाचार्यजी के हर कदम पर मुझे चलना है

एक एक स्थली पर लीला

एक एक तट पर श्री यमुनाजी पय पान

एक एक रज से श्री गोवर्धननाथजी दर्शन

एक एक वनस्पति से श्री वैष्णवता की न्योछावर

एक एक कण में श्री श्रीनाथजी का चरण स्पर्श

एक एक गूंज में अष्टसखा कीर्तन

एक एक रंग में श्री गुसाईजी का संग

अदभुत अनोखा अलौकिक अचंभित

धन्य धन्य

हे श्री आचार्य वल्लभाचार्यजी

मैं संकल्प करता हूं कि यह क्षण से आपका दास हूं

आपकी हर आज्ञा का क्षर अक्षर पालन करुंगा

आपके हर मार्ग पर मैं स्वयं को शरणागत करता हूं

जगत के हर दोषों का निवारण करके आपश्री चारितार्थ दिशा निर्देशक पर न संशय - न आवेग - न अपेक्षित कोई विचार और व्यवहार करुंगा

आपके सानिध्य में मेरा तन मन धन और जीवन

मेरो तो आधार श्री वल्लभ के चरणारविन्द

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हर एक व्रज परिक्रमा वासी को मेरा दंडवत प्रणाम

" व्रज परिक्रमा "

हे सखी! चलो री

हे सखा! चलो रे

व्रज रज छूते छूते चलो री

व्रज रस पीते पीते चलो री

श्री यमुना घाटे श्री वल्लभ बैठके

श्री यमुना तटे श्री व्रज मंडले

मन विशुद्धे चलो री 🙏

तन पवित्रे चलो री 🙏

श्री द्वारकाधीशे श्री गोकुलनाथे

श्री ठकुराणी घाटे श्री प्रथम बैठके

दंडवत करने चलो री 🙏

झारीजी भरने चलो री 🙏

श्री कृष्ण लीला भजे श्री कृष्ण रंग पाएं

श्री यमुना पूजन करे श्री यमुना पान करे

श्री कृष्ण शरणं चलो री🙏

श्री यमुना शरणं चलो री 🙏

प्रथम दिन व्रज परिक्रमा 🙏

सर्वे वैष्णव वचनिय को नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

हमारी मान्यता है कि " व्रज परिक्रमा " हमें करनी चाहिए 🙏

मान्यता से हम

१. इतना पैदल चलेंगे

२. इतनी सेवा करेंगे

३. इतना भोग धरेंगे

४. इतना अभिषेक करेंगे

५. इतना दान करेंगे

६. इतना नियम लेंगे

७. इतना दर्शन करेंगे

८. इतना स्नान करेंगे

९. इतना पान करेंगे

१०. इतना कष्ट उठाएंगे

११. इतनी लीला लुटेंगे

१२. इतना व्रत रखेंगे

१३. इतना दंडवती करेंगे

आदि आदि और आदि 🙏

आप और हमने कहीं बार श्री कृष्ण की बाल लीलाओं की वार्ता कहीं बार सुनी, देखी और समझी, शायद कहीं बार चरित्र निभाएं भी है🙏

एक अनोखी रीत कहूं

" व्रज परिक्रमा " में स्व को गोपी हो जाना है 🙏 बस

गोपी हो भये जन्म जीवन सफल हो गये 🙏

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

अवश्य यात्रा में जुड़ना है

अवश्य यात्रा में शामिल होना है

अवश्य यात्रा में अपना मन जगाना है

अवश्य यात्रा में अपना मन संवारना है

अवश्य यात्रा में अपना मन परिवर्तनना है

अवश्य यात्रा में अपना मन पुष्टिमय धरना है

अवश्य यात्रा में अपना मन शरणागत होना है

संभल संभल कर हमने हमारा मन संसारी बनाया

समझ समझ कर हमने हमारा मन जागतिक बनाया

अब

पुष्टि पुष्टि कर हमारे हमारा मन पुष्टि सिद्धांत बनाना है

जी लिया है अब तो संभलना ही है

यात्रा करके मन मोड़ना है 🌷🙏🌷

जितने कदम उतनी डगर पर मेरा " दंडवत प्रणाम 🙏"

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

कैसे आऊं रे कन्हाई तेरी गोकुल नगरी

बड़ी दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

जल भरने आऊं निरखुं गोकुल नगरीयां

जल भरने आऊं कान्हा

निरखुं गोकुल नगरीयां

निरख निरख बहें आंसू की लड़ियां

निरख निरख बहें कान्हा आंसू की लड़ियां

कैसे चले कदम प्रेम डगरिया

बड़ी दूर नगरी

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हैया तेरी गोकुल नगरी

बड़ी दूर नगरी

गौरस बेचने जाऊं पहुंचुं मथुरा नगरीयां

गौरस बेचने जाऊं कान्हा

पहुंचुं मथुरा नगरीयां

कान्हा लो कोई कान्हा लो साद पुकारैया

हंस हंस कर सब करें मोरी मश्करी कन्हैया

कैसे भूलु मैं अपनी प्रेम मधुरीयां

बड़ी दूर नगरी

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी गोकुल नगरी

बड़ी दूर नगरी 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" લહેર કરવી "

જબરદસ્ત વાક્ય છે 🙏

આજકાલ કોઈ કોઇની જોડે હોય

આજકાલ કોઈ કોઇની સાથે વાત કરતા હોય

અરે! તમે તો આમ અને તેમ

ઓહહહ! તમે તો આખી જિંદગી શું કર્યું અમે જાણતા નથી!

ભાઈ બહું બહું!

હવે તો કરો જલસા 🌷

દીકરી પરદેશ - દિકરો કમાય તો હવે તો તમારે લીલા લહેર 🌷

વહુ રમઝણી 👌

હવે તમારે કરવાનું શું?

કોણ બોલે છે?

કોને કહે છે?

હાં! તમે જ મારું ભલું ઈચ્છો છો

હાં! તમે જ મારું સારું વિચારો છો

ચોક્કસ! ચોક્કસ! 🌷🙏🌷

ધન્યવાદ 🌷🙏🌷

એકલા વિચારીએ ▯

હાં! હાં! બહુ કર્યું

હવે શાંતિ થી જ જીવવું અને મઝા જ કરવી

ત્યાં જ ઘડિયાળ બોલી

અરે દવા લીધી! પ્રેશર ની - સુગરની!

લાવ લઈ લઉં 😮

અરે! આ ઘુંટણ નો દુઃખાવો

આ આંખ નો મોતિયો

આ દાંત નું ચોક્કું

આ કાન ની બહેરાશ

વિગેરે વિગેરે વિગેરે

ત્યાં ફોન રણક્યો

એલાઉ! આજે આપણે સિનેમા જવાનું છે એટલે બહાર ખાઈશું 👈

અરે પણ ગયા મહિને તો ચાર પિક્ચર અને છ વખત હોટલમાં ગયા તો હતા

આ વારંવાર શું?

અરે તું ચિંતા કેમ કરે છે?

આજે પૈસા નહીં વાપરીએ તો ક્યારે વાપરીશું?

તું તૈયાર થઈ જજે! 👋

અરે પણ પેલા દાંત નાં ડૉક્ટર ની એપોઈન્મેન્ટ લીધી છે

અરે કેન્સલ!

કાલે જઈશું

ક્રમશ:

" व्रज परिक्रमा "

श्रद्धा और विश्वास कि अनोखी बुनियाद - व्रज परिक्रमा

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे श्री आचार्य अचल शिष्यार्थी की टेक - व्रज परिक्रमा

श्री यमुनाजी हमारी पुष्टि धात्री वात्सल्य शरणागत की विवेकी - व्रज परिक्रमा

श्री गिरिराजजी हमारे रक्षक वीर भक्ताभिलाषी रामारसस्पर्शकरप्रसारी की कृपा - व्रज परिक्रमा

श्री श्रीनाथजी हमारे परम प्रेमी का अमृत लीला रंग - व्रज परिक्रमा

श्री वैष्णव हमारे पुष्टि प्रदीप्त दीप प्रक्टायक का प्रकाश - व्रज परिक्रमा

व्रज परिक्रमा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" व्रज परिक्रमा "

एक एक के मुख पर आनंद है

एक एक की गूंज में " श्री कृष्ण: शरणं मम " है

एक एक के नैनों में दर्शन है

एक एक की द्रष्टि में " जय श्री कृष्ण " है

एक एक के कदम पर व्रज रज है

एक एक के शरण में " दंडवत प्रणाम " है

एक एक के अंग में पुष्टि बल है

एक एक के रंग में " श्याम सुंदर श्री यमुना महाराणी " है

एक एक के पुरुषार्थ में निरपेक्ष भाव है

एक एक की नीति में " जय जय श्री वल्लभ " है

एक एक की धड़कन में प्रेम है

एक एक की रीति में " जय जय श्री राधे " है

हमारे मुख श्री वैष्णव जन वैष्णव:

हमारे नैन श्री श्रीनाथजी श्री नाथ:

हमारे कदम श्री गोवर्धन गौवर्धन:

हमारे रंग श्री यमुनाजी श्री यमुना:

हमारे संग श्री वल्लभ श्री वल्लभ:

हमारे दिल में श्री राधा श्री राधा:

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रेम की धारा न कभी रुकती है और न कभी तुटती है

अविरत बहती यह धारा में जिसने डूबकी लगाया

वह कभी तैरता नहीं है और वह कभी किनारे पर नहीं आता

जो डूब गया वही पार लग गया और जो नासमझ पाया

वह भटकता गया विचलित गया बिछड़ता गया

राधा कृष्ण के प्रेम में एक घड़ी न कोई विचलित हुआ न कोई भटका न कोई बिछड़ा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर चढ़ा दो

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर संवार दो

ख्यालों से ख्याल बढ़ते है

यादों से याद जगती है

जब यह नैनों की नजरों में

प्रिये की तस्वीर उठती है

तो दिल पर प्यार बरसता है

सांवरे! ओ ओ सांवरे

अपना रंग तुम हम पर संवार दो

❦❦❦❦❦❦❦❦